JAMNALAL BAJAJ
FOUNDATION

श्री पोपटलाल शहा

रचनात्मक कार्यो के लिए पुरस्कार प्राप्तकर्ता –१९८४

बहुत ही साघारण परिस्थिति में मेरा जन्म हुआ, और मेरे पास में कोई साधन–सामग्री भी नहीं थी. गत सत्तर बरस मे, खादी–प्रचार, नशाबंदी, हरिजन–कल्याण, महिला–कल्याण, बाल–कल्याण, आरोग्य–प्रचार, स्वच्छता–प्रचार, गो–सेवा, कुष्ठ रोगियों की सेवा, शिक्षा–प्रचार, राष्ट्रभाषा–प्रचार, अन्ध–अपंगोंका कल्याण, मतिमंद बालकों का कल्याण, बाल–सुधार–कार्य, ग्रामोद्योग, ग्रामविकास आदि क्षेत्रों में जो भी कार्य मैं कर सका उसके मूल में, उन कार्यों के प्रति मेरी अपनी निष्ठा ही एकमेव कारण रही है। नशाबंदी–कार्य की प्रेरणा मुझे सत्तर साल पहले लोकमान्य तिलकजीसे मिली। गांधीजी जब पुणे शहरमें पधारे थे, तब उन्हींसे प्रेरणा लेकर मैंने खादी–प्रचार–कार्य में अपने आपको अर्पित करनेका निश्चय किया। खादी–प्रचार करनेका मेरा ढंग स्वयं गांधीजीको बहुत पसंद आया, यह बतानेमें मुझे गौरव लग रहा हैं।

ऊँची शिक्षा, संपत्ति व अन्यान्य लौकिक साधन मेरे पास कुछ नहीं थे। फिर भी समाज विकास हेतु रचनात्मक कार्य की नितांत आवश्यकता है और कष्ट उठाकर भी उसे संपन्न कर ही लेना है, यह निष्ठा मेरे मन में गांधीजीके कारण जाग उठी। देश के अनेकानेक नेताओं की प्रेरणा भी मुझे मिली। विकट आर्थिक कठिनाईयां सहन करते करते मैं यह कार्य करता रहा। आज श्री जमनालाल बजाज प्रतिष्ठान की तरफ से प्राप्त पुरस्कार से मेरे कार्य का गौरव हो रहा है। कार्यकर्ता के कार्य का गौरव समाज की दृष्टि से बड़ा ही उपयोगी साबित होता है। गांधीजी का रचनात्मक कार्यक्रम व्यापक –विशाल दृष्टिकोण से परिपूर्ण है। इस कार्य को प्रोत्साहित करना बहुत अच्छी बात है। प्रत्यक्ष कष्ट उठाकर रचनात्मक कार्य करनेवालों की तरफ समाज भी बड़ी आत्मीयता से देखता है, यही मेरा अनुभव है ।

रचनात्मक कार्यक्रम में समाविष्ट सभी कार्यों की समाज को सर्वकाल आवश्यकता है. औद्योगीकरण चाहे जितना बढ़े, खादी–ग्रामोद्योगका महत्व कभी घटनेवाला नहीं है। उसका भवितव्य उज्ज्वल है। उसके लिए प्रयत्नपूर्वक बहुत कार्य करना पड़ेगा। व्यसनाधीनता से समाजका सर्वनाश होता है। समाज की सही प्रगति के लिए, व्यसनमुक्ति की बड़ी आवश्यकता रहती है। इसी कारण से नशाबंदीका काम बराबर चालू रखना ही पड़ेगा। हरिजन, महिला, बालक, रोग पीड़ित, अनाथ, अपंग, अन्ध, मतिमंद व्यक्तियों का कल्याण करना ही होगा। तभी समाज स्वावलंबी और सुखी होकर पूर्ण प्रगति कर सकेंगे । करोड़ों देशबन्धु आज निरक्षर हैं, अशिक्षित हैं। और शिक्षा–प्रचार का काम ही एक प्रचण्ड पहाड़ के समान सामने है। इन सभी विविध क्षेत्रों में कार्य करनेवाली संस्थाओं ने मुझे पदाधिकारी के रूप में बारबार चुनकर मेरे कार्यको पसंद किया है, मुझे प्रोत्साहित किया है। और इस तरह का कार्य सतत करते रहने की आज इस अवस्था में भी मेरी बलवती इच्छा भी है । इस कार्य के लिए मैं सतत पदयात्री रहा हूँ। क्योंकि समाजके साथ, और दीन–दुर्बल बन्धुओं से संपर्क बढाने की दृष्टीसे पदयात्रा ही आवश्यक साधन होता है ऐसा मेरा अपना अनुभव है।

स्वयंसेवक कार्यकर्ता की सेवाभावना, स्वावलंम्बन, सहकारिता और समाजप्रेम के द्वारा विविध प्रकार के रचनात्मक कार्य निरंतर होते रहने चाहिएं। उन कार्यों का विस्तार और विकास होना चाहिए। रचनात्मक कार्यक्रम को बड़ा प्रोत्साहन मिलता रहे, और उससे समाजके दु:ख दूर हों, यही मेरी आकांक्षा है। आज की परिस्थितिमें रचनात्मक कार्यों के संबंधमें कुछ लोग निराशा व्यक्त करते रहते हैं, परंतु सिवा इन कार्यों से दूसरा मार्ग ही कौनसा है? निराशाको हटाकर आशावादी भावना से आगे बढ़ना होगा, कार्य करना होगा। पूरा विश्वास है हम यशस्वी रहेंगे।